

कार्य करवाने के लिए गुस्से का प्रयोग न करें

प्रश्न:- हमारे बिलीफ सिस्टम कैसे बनते हैं?

उत्तर:- बिलीफ सिस्टम बनाने के लिए वातावरण भी हो सकता है या जो बचपन से मुझे सिखाया गया है वो भी हो सकता है। जब मैं छोटी थी तो मैंने देखा कि जब भी मुझसे कुछ गलती हुई तो मुझे डांटा गया या जब भी मैंने ऐसा कुछ किया, जो मेरे माता-पिता के अनुसार सही नहीं था तो मुझे डांटा गया। अब इस घटना को देखते हुए हमारा यही बिलीफ बना की जब भी कोई कुछ ऐसा करे, जो आपको सही नहीं लगे तो उसको चेंज करने का तरीका है, उसको डांटो। इस तरह से हम बिलीफ सिस्टम बनाते गये। अब इसका मतलब ये नहीं है कि हम औरों पर दोष डालना शुरू कर दें कि हमने जो भी बिलीफ सिस्टम बनाये उसके लिए आप जिम्मेवार हैं।

हमें फिर अपने जीवन में थोड़ा रूककर देखना पड़ेगा कि वो बिलीफ सिस्टम क्या परिणाम क्रियेट कर रहा है। यह तो जैसे एक कम्प्यूटर के समान है। इसको चलाने वाली जो पावरफुल चीज होती है वो है ऑपरेटिंग सिस्टम। ऑपरेटिंग सिस्टम में भी किसी के पास विंडोज है, तो किसी के पास मैक है, तो ऑपरेटिंग सिस्टम बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि सारे प्रोग्राम्स उसी के आधार पर चलेंगे। तो ये जो हमारा बिलीफ सिस्टम है वह ऑपरेटिंग सिस्टम की तरह है। इसको समय-समय पर अपडेट करना जरूरी है।

प्रश्न:- हमारा यह बिलीफ है कि दर्द के साथ रहना नेचुरल है?

उत्तर:- क्या ये नेचुरल है! आज टेंशन होना तो नेचुरल है। हम हमेशा खुश कैसे रह सकते हैं, ये भी तो एक बिलीफ सिस्टम है। ये ठीक

है, कोई भी हमारे बिलीफ सिस्टम को चुनौती नहीं दे सकता जब तक कि हम स्वयं उसे चुनौती न दें। तो मुझे खुद अपने आपको देखना पड़ेगा क्योंकि बिलीफ एक मान्यता है।

प्रश्न:- जो चीज मैं बचपन से देखती आयी, मुझे उसके बारे में अनुभव होते गये, जब अनुभव हुए तब वह हमारा बिलीफ सिस्टम बन गया। इस तरह से बिलीफ अनुभव भी तो बन सकता है?

खुशनुमा जीवन जीने की कला

(अवेकनिंग विथ ब्रह्माकुमारी से)



-ब.कु.शिवाजी

उत्तर:- सपोज बचपन में मैंने ये सीखा की कोई गलती करे तो उसे डांट दो। मेरे पैरेंट्स जब गुस्सा करते हैं तब मैं पढ़ने बैठती हूँ, जब गुस्सा नहीं करते हैं तो मैं नहीं पढ़ती हूँ। अब इससे मेरा क्या बिलीफ सिस्टम बना? किसी से अगर काम करवाना है, तो उनको डांट दो तो वो काम कर देते हैं। अब मैं इसी बिलीफ सिस्टम के साथ अपने जीवन में कार्य करना शुरू कर देती हूँ। फिर चाहे वो ऑफिस में हो, चाहे वो घर पर हो, मैं इसी बिलीफ सिस्टम के साथ कार्य करती हूँ कि किसी से भी काम करवाना हो तो उनको डांट दो काम हो जायेगा। लेकिन क्या इसका प्रभाव मेरे व्यक्तिगत जीवन पर पड़ता है? क्या इसका प्रभाव मेरे रिश्तों पर पड़ता है? एक तरफ तो हम कहते हैं कि मुझे खुशी चाहिए, दूसरी तरफ मैंने बिलीफ सिस्टम बनाया कि गुस्से से

काम होता है। 'खुशी और गुस्सा' ये दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते हैं। मुझे रोज लोगों से काम करवाना है और मैं रोज इसी बिलीफ सिस्टम से काम कर रही हूँ कि गुस्से से काम होता है। तो हमारे अंदर कौन-सी एनर्जी क्रियेट हो रही है? गुस्से वाली। तो जैसी एनर्जी बाहर जायेगी वैसी ही एनर्जी मेरे पास वापस आयेगी। इतना सारा गुस्सा क्रियेट करके सारा दिन हम क्या कहते हैं कि मुझे खुशी चाहिए। तो खुशी कैसे मिलेगी!

प्रश्न:- इससे हमारा काम तो हो गया ना?

उत्तर:- आप काम करवाने के लिए गुस्से का यूज कर रहे हो। लेकिन हमें अपने जीवन में रूककर ये चेक करना होगा कि मुझे जीवन में क्या चाहिए? समझो कि मेरा मन ऑपरेटिंग सिस्टम है। गुस्से से काम हो गया लेकिन मैं ये

चाहती हूँ कि एक तरफ की बातें मुझे समझ में नहीं आती है। मुझे रिजल्ट कुछ और चाहिए। अब रिजल्ट तो वो खुशी वाला नहीं आ रहा है ना! गुस्सा बार-बार करने के बाद रिजल्ट 'खुशी' नहीं हो सकती है। अगर वो रिजल्ट नहीं आ रहा है जो मुझे चाहिए तो कहीं-कहीं मुझे ऑपरेटिंग सिस्टम को चेक करना पड़ेगा। क्योंकि निर्देश मैं कुछ और भर रही हूँ और परिणाम कुछ और उम्मीद कर रही हूँ। मैं करूँ गुस्सा और चिंता तो खुशी कहां से होगी? आप गुस्से से भी काम क्यों करवा रहे हैं, चाहिए तो खुशी लेकिन हमारा दूसरा बिलीफ सिस्टम ये बना हुआ है कि जितना काम होता जायेगा, उतनी सफलता मिलती जायेगी। जितनी सफलता मिलेगी उतनी खुशी मिलेगी। यह हमारा बिलीफ सिस्टम बना हुआ है। (क्रमशः)

लोगों को जिंदगी बोझ क्यों लगती?

लगता है।

इस घटना से प्रभावित राजनीतिज्ञ को देख हिटलर ने दूसरा पासा फेंकने का नकाफ़ी किया। साथ में खड़े दूसरे सैनिक को कहा आप भी छलांग लगाओ और आज्ञा होते ही दूसरा सैनिक भी कूद गया। ये देख वह अंग्रेजी नेता तो कांप गया। और उतने में ही हिटलर ने तीसरे सैनिक को छलांग लगाने को कहा आप भी कूद जायें। और वे छलांग लगाने के पहले ही अंग्रेजी राजनेता ने उस सैनिक को पकड़ लिया। और कहा कि क्या आप पागल हो गये हैं क्या? इस तरह से क्या मर जाना होता है क्या? जीवन में जीने में तुझे कोई रस नहीं है क्या? इतने में वह सैनिक ने कहा छोड़ दो मेरा हाथ। इस तरह से जीना क्या इसीको जिंदगी कहते हैं, उसी को जिंदगी कहते हैं? हमारी जिंदगी का कोई सार्थक अर्थ है क्या? इस (हिटलर) के साथ जीने के बदले मरना बेहतर है।

ये लोग करने के लिए इतना आतुर है

क्योंकि जिंदगी उसकी दोजख बन चुकी है। कुछ भी बहाने कोई भी जगह पर मरने के लिए आतुर है। 'अपना धर्म

खतरे में है।' ऐसा शब्द सुनने के साथ ही कई करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मरने की आतुरता, जो कि व्यक्ति का जीना कितना नीरस बन गया है। इसका उदाहरण है यहां मरने वाले कोई बड़ा विचारशील होते हैं क्या? उनके पास कुछ खास बुद्धि या प्रतिभा होती है ऐसा कभी देखा है। सच पूछिए तो जड़ बुद्धि वाले ही ऐसा करते हैं।

जिस परमात्मा ने दी हुई जिंदगी का मूल्य उसे समझ से परे है। ऐसे मूर्ख लोग ही मरने के लिए तैयार होते हैं। कोई धर्म-धुरंधर या राजनेता इस तरह मरने के लिए तैयार होते देखा है? वे लोग तो आगे रहते भी उनसे (मरने के लिए) अलग रहते हैं। लोग भल मर जाये, ऐसे भी राजनेता के मन में व्यक्ति की जिंदगी की कोई कीमत नहीं होती। थोड़े रुपये खर्च करके आदमी का खून करा सकते हैं। कहीं कोई जनून हो जाता है तो वे राजनीतिक लोग खुद की रोटी सेकते हैं। शेष पेज 8 पर...



भरतपुर। दीप प्रज्वलित करते हुए राजस्थान राजस्व मण्डल की अध्यक्ष मीनाक्षी हूजा, ब्र.कु.कविता तथा अन्य।



बिजनौर। दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ.प्रीति गुप्ता, अशोक जैन, ब्र.कु.सुरेश एवं ब्र.कु.भारतभूषण।



दिल्ली, पालमविहार। गुप फोटो में हैं गुड़गांव के मेयर परमिंदर कटारिया, डॉ.एम.डी.गुप्ता, डॉ.मंजु गुप्ता, ब्र.कु.उर्मिल एवं ब्र.कु.सुदेश।



उल्हासनगर। प्लेटिनम जुबली पर दीप प्रज्वलित करते हुए स्वामी शांति प्रकाश आश्रम के वाशु भाई, ब्र.कु.गोदावरी, ब्र.कु.लाजू।



वापी। प्लेटिनम जुबली में रजनी जोशी, भक्तिन स्वामी, गांधी साहेब, ब्र.कु.दिव्या, ब्र.कु.रंजन ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं।



सानपाडा-नवी मुंबई। महाशिवरात्रि पर दीप प्रज्वलित करते हुए रिलायंस के उपाध्यक्ष बालकृष्ण जिंदल, शांतला आर.भट, विश्वमोहन पटनायक, ब्र.कु.शीला तथा अन्य।